ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

उत्तर आधुनिकतावाद – अभिनव विकास यात्रा

Postmodernism - Innovation Development Tour

Paper Submission: 15/10/2020, Date of Acceptance: 26/10/2020, Date of Publication: 27/10/2020

कुन्दो रानी डे
सह आचार्य
हिंदी विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
चिमनपुरा, शाहपुरा,
जयपुर, भारत

सारांश

उत्तर आधुनिकतावाद अपने आप में एक नए विचार श्रृंखला, नए स्वरूप में साथ हिंदी जगत में आच्छादित है। वैश्वीकरण, नवीन शैक्षिकक्रांति, नवसमाजवाद, नव सांस्कृतिक वाद, औद्योगिक करण, उपनिवेशवाद, बाजारवाद ,विज्ञापन प्रचार–प्रसार, नई तकनीकी युग के परिणाम स्वरूप पल्लवित एक स्वतंत्र धारा है जो नई मान्यताओं को स्वीकृति देती है या यूं कहें पुराने विचारों के गर्भ में पल्लवित पुष्पित एक नई विचारधारा है, जिसने धर्मराजनीति, मानव, ईश्वर, समाज तक को मृत मान लिया। हिंदी साहित्य जगत में सुधीश पचौरी ने इस अभिनव विचारधारा का शंखनाद किया। पूर्णतः तर्क एवं विखंडनवाद, बहुलता वाद, यौनवाद, दलित–विमर्श, नारी विमर्श, किन्नर एवं समलैंगिकता विमर्श पर बल देती है। इसे नए युग की नई विचारधारा भी कह सकते हैं जिसकी नीव संरचनावाद पर आधारित है। डॉक्टर कृष्ण दत्त पालीवाल इसे नव बौद्रिकवादी क्रांति की एक अद्भुत आईडियोलॉजी मानते हैं। उनके अनुसार उत्तर आधुनिकतावाद अपनी कोख से बंजर है उसके पास ना कोई विचारधारा है ना कोई दर्शन। इसकी विकास यात्रा की कहानी अत्यंत रोचक, अभिनव तथा नवीन है।

Post-modernism is in itself a new thought series, with its new form covered in the Hindi world. Globalization, new academic revolution, neo-socialism, neoculturalism, industrialization, colonialism, marketism, advertising, propagation, as a result of the new technological age is an independent stream that accepts new beliefs, or rather flourishes in the womb of old ideas. Pushpit is a new ideology, which considers religion, politics, human, God, society even dead. In the Hindi literature world, Sudhish Pachai conceived this innovative ideology. Full emphasis on logic and fragmentationism, pluralism, sexism, Dalit discourse, women's discourse, eunuch and homosexuality discourse. It can also be called the new ideology of the new era, whose foundation is based on structuralism. Dr. Krishna Dutt Paliwal considers it a wonderful idiology of the new intellectual revolution. According to him post-modernism is barren from its womb, it has no ideology or philosophy. The story of its development journey is very interesting, innovative and innovative.

मुख्य शब्द : आईडियोलॉजी, बौद्धिकतावाद, विखंडनवाद समग्रतावादी, पोस्ट इंडस्ट्रियल रेव्यूलेशन, अभिवृत्तियों।
Ideology, Intellectualism, Fragmentationism Totalitarian, Post Industrial Revolution, Attitudes

प्रस्तावना

आधुनिकतावाद वर्तमान भौतिक एवं यांत्रिक युग की नई विचारधारा का खिलता हुआ एक नया पुष्प है। नए शैक्षिक क्रांति युग में विचारों का बदलता अभिनव स्वरूप जिसमें नवीन विचारों कई परंपराओं का स्वागत है तथा पुरानी मान्यताऐं, परंपराऐं प्रयोग मृत सदृश्य है। विद्वानों ने इसे पश्चिम ज्ञानोदय के विरुद्ध नई विचारात्मक धारा माना है, जिसका पल्लवन एवं विकास वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद, बहुराष्ट्रीय, बाजारवाद, कंप्यूटीकरण, मास मीडिया, नवीन तकनीकी विकास के कारण हुआ है। यह पूर्णतः मानवीय अस्तित्व एवं मूल्य के साथ–साथ समग्रतावादी, मानवीयतावादी दृष्टिकोणों को नकारती है। इसका फलक अत्यंत विस्तृत है। संपूर्ण सृष्टि इसमें समाहित है। प्रत्येक वस्तु बिकाऊ तथा अस्तित्वहीन है। यहां तक कि विचार और सिद्धांत भी। उत्तर आधुनिकता का मूल स्वर देहवाद और उपभोक्ता संस्कृति है यह संरचना वादी विचारों–संस्कारों के विखंडन पर विश्वास कर मोह भंग को जन्म देती है।

जिसका मूल स्वर संशयवाद एवं नकारात्मकता है। उत्तर आधुनिकतावाद में सत्य आदर्श मूल्यों की कोई कीमत नहीं है। विद्वानों की मान्यता है कि बुर्जुआ वर्ग ने विश्व बाजार में शोषण के जरिए प्रत्येक देश में उत्पादन और उपभोग को वैश्विक चरित्र दे दिया है। जिसके परिणाम स्वरूप धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक मान्यताओं के नए आयाम जन्म लेने लगे हैं। उत्तर आधुनिकता तर्क पर बल देता है। नारी विमर्श, किन्नर विमर्श, दलित विमर्श पर जोर दे रहा है वही नारीदमन, दलित शोषण, नारी बलात्कार, नारी अत्याचार का विरोध करता दिखाई देता है। समानता का अधिकार चाहता है। स्त्री के बदलते स्वरूप का अंकन है इसमें। विज्ञापन में नारी की भूमिका का महत्व है इसमें।

डॉक्टर कृष्ण दत्त पालीवाल लिखते हैं कि यह एक ऐसा बरगद है जिसकी अनगिनत शाखाएं हैं–अर्थात विचारधाराएं, प्रवृतियां, बौद्धिक अभिवृत्तिओं का समुच्चय है। एक खास अर्थ में उत्तर आधुनिकतावाद सूचना, संचारयुग, बहुराष्ट्रीय पूंजीवाद के वर्तमान युग की और संस्कृति का नाम है जिसका कोई केंद्र वाद नहीं है। वह कहते हैं कि ष्उत्तर आधुनिकतावाद प्रत्येक क्षेत्र में नव बौद्धिकतावादी क्रांति की एक अद्भुत आईडियोलॉजी है। एक ऐसी आईडियोलॉजी जो सभी पुरानी विचारधाराओं के उत्तर को समाप्ति का उद्घोष कराती है। पश्चिम जगत में पोस्ट पोस्ट इंडस्ट्रियल रेव्यूलेशन के भीतर से जन्मी इस विचारधारा ने इंडस्ट्रियल एज की सभी चिंतन परंपराओं, अवधारणों, प्रतिमानो, मूल्यों, गतिविधियों पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है।

1. आधुनिकतावाद अपनी कोख से बंजर है। उसके पास ना कोई विचारधारा है, ना कोई दर्शन। उत्तर आधुनिकता का द्वार उत्तर संरचना पोस्ट स्ट्रक्चरलिज्म की ओर खुलता है।
2. डॉक्टर सुधीश पचौरी लिखते हैं कि ष्उत्तर आधुनिकता पूंजीवाद विकास की एक नई स्थिति है और उत्तर आधुनिकता वाद उसका सांस्कृति प्रतत्य।[3])
3. सुधीर पचौरी के अनुसार आधुनिकता वादी कलाकार भूच्च कलाकार हैं। आधुनिकतावाद एलीट कला ने जनता को त्यागकर जो शून्य बनाया है उत्तर आधुनिक कला उसे भरती है।
4. डॉक्टर कृष्ण दत्त के अनुसार बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में कला साहित्य मीडिया अर्थ तंत्र मंडी–अर्थव्यवस्था राजनीति समाज दर्शन आदि क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन आए हैं उन सभी में उत्तर आधुनिकता शब्द के कई अर्थ है लेकिन वे इतने व्यापक हैं कि उन्हें परिभाषाओं में बांधा नहीं जा सकता है। वे कहते हैं कि विद्वानों ने खूब सोच समझकर इतना कहां है कि ष्उत्तर आधुनिकतावाद साठ के दशक के उन मुक्ति मुक्ति आंदोलनों स्वाधीनता–खोजी विचारधाराओं, निरंकुश यौन प्रवृत्तियों से निकला है जिसने सभी पुरानी नीतियों, सिद्धांतों विचार–धाराओं का अंत कर दिया है। हर विचार का बैठा अनुशासन टूट गया है और चिंतन की स्वाधीनता का उफनता सागर इस नई संस्कृति में मौजूद है। सृजनात्मक आजादी का आग्रह नारी मुक्ति, यौन–क्रांति, सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश जड़ों की ओर लौटने का इरादा आधुनिकतावादी फार्मूलों का खंडन सभी पुरानी अवधारणाओं पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए उन पर नए सिरे से विचार करने की आजादी उत्तर आधुनिकतावाद ठोस लक्षण हैं।
5. इस आधुनिकतावाद बहुसंस्कृतिवाद पर आधारित है। इसमें केंद्रवाद की अपेक्षा स्थानीयता, क्षेत्रीयता पर जोर है और एकीकृत के वजाय भिन्नता, विकेंद्रीयता को यह मूल प्रश्न के रूप में अपनाता है।दार्शनिक विचारधारात्मक सांस्कृतिक धार्मिक सभी तरह की पुरानी अवधारणाओं के खूंटे उखाड़ देने का नतीजा यह हुआ कि हाशिए पर स्थित समूह विरोधी विचार परिधि पर स्थित दलित, अश्वेत जनजातियां नारी मुक्ति की तमन्ना समलैंगिकता हर तरह के पहचान खोजते लुटे पिटे लोग सत्ता की भागीदारी के धारक प्रवृत्तियों का उदय सांस्कृतिक संवाद से वंचित रखे जाने वाले लोग वर्चस्व के लिए संघर्ष करती भीड़ जो कर रही है वे उत्तर आधुनिकता के लक्षण हैं।
6. आधुनिकतावाद का विकास–20वीं–21वीं सदी के उत्तरार्ध में अर्थव्यवस्था, सामाजिक, धार्मिक, संस्कृति, संगीत कला, चित्रकला, वास्तुकला के विराट परिवर्तन स्वरूप हुआ। डॉ अमित शुक्ल एवं नृपेंद्र के अनुसार उत्तर आधुनिकतावाद के विकसित होने में लगभग 300 वर्ष लगे हैं उसी प्रकार उत्तर आधुनिकतावाद बीसवीं शताब्दी के 60 दशक के उन मुक्ति आंदोलनों से निकला है जिन्होंने व्यक्ति तथा व्यवस्था, अल्प समूह तथा वृहत समान विचारों तथा विसंगतियों नीतियों राजनीति व राष्ट्रीयता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। नारी मुक्ति, दलित–दलित–दमन विद्रोह अश्वेत रोष शांति मार्च , मैसन क्रांति, युवा विद्रोह और ना जाने कितने छोटे छोटे आंदोलनों में विभेदों और केंद्रीय चक्रव्यूह को तोड़ कर समाज को जन समाज व संस्कृति को जन समूह की संस्कृति में बदल दिया है।आज उत्तर आधुनिकता के प्रभाव क्षेत्र का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है, कि फिल्म से लेकर फैशन तक, विचार से लेकर विज्ञापन तक, कल्चर से लेकर लोक कॉमिक्स तक, कला से लेकर साहित्य, संस्कृति और यहां तक कि इतिहास, दर्शन, मीडिया सभी इससे प्रभावित दिखाई देते हैं। परिणाम स्वरूप विरोधी विचार हाशिए पर स्थित लोग नारी वर्ग, दलित जनजातियों, समलैंगिक स्त्री–पुरुष आदि जिन्हें समाज में सक्रियता व सांस्कृतिक संवाद के दायरे से बाहर रखा जाता था। अब अस्मिता के संघर्ष समूह बनकर उभरे हैं।हिंदी जगत् में डॉक्टर सुधीश पचौरी ने उत्तर आधुनिकतावादी विचारधारा का शंखनाद किया। नव तकनीकी क्रांति, शैक्षिक क्रांति से एक नए संसार की सृष्टि हो रही है। उत्तर आधुनिकतावाद मानव, ईश्वर, धर्म, राजनीति को मृत मानकर समाप्ति की घोषणा करती ळें
7. आठवें दशक 1980 में उत्तर आधुनिकता का शंखनाद हुआ। लघु पत्र–पत्रिकाओं में बहस होने लगे लेकिन हिंदी जगत् में इसकी गूंज का श्रेय डॉक्टर सुधीश

पचौरी को दिया जा सकता है। इस नवीन विचारधारा के प्रेरणा स्रोत रहे। वैचारिक नव्यता के साथ साथ विकसित देशों के हाशिए के लोगों को प्रमुख स्थान प्रदान करती है यह धारा। कृष्ण दत्त पालीवाल के अनुसार हिंदी के विद्वानों ने 1980 के आसपास की चर्चा शुरू की जबकि बंगाल में यह चर्चा सन् 1960 के आसपास जोर पकड़ती हुई मिलती है। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में उत्तर आधुनिकतावाद की चर्चा सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य के केंद्र में मौजूद थी। भारत में कुछ लोग पढ़कर कुछ सभा गोष्ठियों में उनकी चर्चा सुनकर उनके पीछे दीवाने हो कर दौड़ रहे हैं। हिंदी में तो हालत यह है कि उत्तर आधुनिकतावाद का चिंतन क्या आया पागलों के गांव में ऊंट आ गया।

पश्चिमी औपनिवेशिक गुलामी का जादुई तमाशा काल। इससे हमारी स्मृति को खतरा उत्पन्न हो गया है।

8. अनेक विद्वानों ने माना है कि डॉ सुधीश पचौरी ने हिंदी में उत्तर आधुनिकता को व्यक्त किया है। उनके अनुसार हिंदी में या तो उत्तर आधुनिकतावाद को पश्चिम नए ज्ञान के रूप में हाथों–हाथ लिया है या फिर उसका जबरदस्त प्रतिरोध किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तर आधुनिकतावाद की विकास यात्रा का वर्णन किया गया है।

निष्कर्ष

अर्थात निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि 1990 में सुधीर जी की पुस्तक ष्कविता का अंतष् में विधिवत उत्तर आधुनिकता के स्वर सुनाई देने लगे। श्रीकांत वर्मा अमेरिका यात्रा के पश्चात यह मानने लगे कि पश्चिम में कला संस्कृति एवं साहित्य की दुनिया में परिवर्तन का दौर प्रारंभ हो चुका है। जिसे आधुनिकतावाद की पहली माने तो गलत ना होगा।

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि उत्तर आधुनिकता साहित्य में एक नवीन धारणा नहीं पृष्ठभूमि को लेकर उभरी जिसमें संरचनावाद को महत्व दिया गया पुरानी परंपराओं का बहिष्कार किया गया। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में साहित्य कला दर्शन अर्थ तंत्र में निरंतर परिवर्तन हुए उसी के परिणाम स्वरूप इसका जन्म माना जाए तो गलत ना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *उत्तर आधुनिकतावाद की ओर कृष्ण दत्त पालीवाल पृष्ठ 49–50*
2. *उत्तर आधुनिकतावाद की ओर कृष्ण पालीवाल पृष्ठ 49–50*
3. *उत्तर आधुनिक साहित्य विमर्श–डॉक्टर सुधीश पचौरी पृष्ठ 35*
4. *उत्तर आधुनिक साहित्य विमर्श– डॉ सुधीश पचौरी*
5. *उत्तर आधुनिकतावाद की ओर–कृष्ण पालीवाल पृष्ठ 49*
6. *उत्तर आधुनिकतावाद की ओर–कृष्ण दत्त पालीवाल पृष्ठ 49*
7. *उत्तर आधुनिकतावाद का स्वरूप और हिंदी साहित्य दशा दिशा लेख से उद्धृत–डॉ अमित शुक्ल संपादक–डॉ वीरेंद्र सिंह यादव (उत्तर आधुनिकता विचार और मूल्यांकन पृष्ठ 122–181)*
8. *उत्तर आधुनिकतावाद की ओर–डॉक्टर कृष्ण दत्त पालीवाल पृष्ठ19*